International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

पर्यावरण शिक्षा में अध्यापक का स्थान

Ashish Samuel Huri

Assistant Professor, Ewing Christian College, Prayagraj-211003

सारांशः

वर्तमान में अध्यापक की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण एंव विशिष्ट हो गई है। क्योंकि अध्यापक ही देश के भविष्य का निर्माण करने में संलिप्त हैं। अध्यापक की स्थिति बहुत ही आलोचनात्मक है कयोंकि वह कक्षा में उन छात्रों को तैयार कर रहा है जो भविष्य के नागरिक बनेंगे और देश के उत्थान एंव विकास में अपना योगदान देंगे। अतः एक अध्यापक की स्थिति को ध्यान में रखते हुए हम यह कह सकते हैं कि अध्यापक देश की नीव के निर्माण का कार्य कर रहे हैं। आदिकाल से ही अध्यापक का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण रहा है। परन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य पर विचार करें तो शिक्षक को बहुत ही भिन्न भिन्न भूमिकायें अवश्य ही निभानी पड़ती हैं। समय समय पर एक अध्यापक को एक मित्र, एक दार्शनिक एंव नेतृत्वकर्ता के रुप में अपनी भूमिकाओं को निभाना पड़ता है। वर्तमान मे हम एक साधारण गुणों वाले अध्यापक की अपेक्षा अधिक सृजनात्मक एंव विभिन्न कौशलों वाले अध्यापक की कामना करते हैं। क्योंकि वह छात्रों को उस भविष्य के लिए तैयार करता है जहाँ हर एक कार्य में प्रतियोगिता है। इस प्रतियोगी संसार में एक मनुष्य अपने विशिष्ट कौशलों एंव गुणों के आधार पर ही जीवनयापन कर सकता है।

पर्यावरण शिक्षा में अध्यापक का स्थान :

अध्यापकों एंव अध्यापिकाओं से यह अपेक्षित है कि वह विभिन्न विषयों के साथ ही साथ छात्र छात्राओं को पर्यावरण से सम्बन्धित शिक्षा का भी ज्ञान प्रदान करें। वर्तमान में छात्रों एंव छात्राओं के लिए पर्यावरण से सम्बन्धित ज्ञान का होना अति आवश्यक है। क्योंकि बदलते हुए परिवेश एंव आवश्यक्ताओं के साथ ही साथ पर्यावरण पर पड़ने वाले उसके प्रभाव, दुष्प्रभावों एंव उनके परिणामों से अवगत कराने की जिम्मेदारी अध्यापक की ही होती है। पूर्व में मनुष्य की आवश्यक्तायें सीमित थी एंव विकल्प कम थे परन्तु यदि वर्तमान का विचार करें तो आज मनुष्य की आवश्यक्ताओं की कोई सीमा नही है एंव विकल्पो का भण्ड़ार है। बढती आवश्यक्ताओं ने पर्यावरण के ऊपर एक अनावश्यक बोझ उत्पन्न कर दिया है। छात्रों को पर्यावरण से सम्बन्धित विभिन्न घटकों एंव उसके अंगों के बारे में अवगत कराने के लिए पर्यावरण की शिक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण है। हमारी आवश्यक्ताओं का प्रभाव किस प्रकार पर्यावरण पर पड़ रहा है यह छात्रों के लिए जानना आवश्यक हो गया है।

पर्यावरण शिक्षा में अध्यापक के कतर्व्य एंव भूमिका :

निम्नांकित बिन्दुओं के द्वारा पर्यावरण शिक्षा में अध्यापक की भूमिका को और अच्छे से समझा जा सकता हैः

1 छात्रों एंव छात्राओं में पर्यावरण के प्रति रूचि उत्पन्न करना :

एक अध्यापक के लिए यह आवश्यक है कि वह उपयुक्त विषय में छात्र एंव छात्राओं की रुचि उत्पन्न करे। रुचि अधिगम को आरम्भ एंव कार्यरत रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। पर्यावरण शिक्षा प्रदान करने से पहले यह अति आवश्यक है कि अध्यापक छात्रों एंव छात्राओं का पर्यावरण जैसे विषय के प्रति रुचि उत्पन्न करें । यदि छात्र एंव अध्यापक दोनो की उक्त विषय में रुचि होगी तब अध्य्यन एंव अध्यापन की गुणवता में निश्चित रूप से विकास होगा। यदि एक अध्यापक पाठ को रोचक एंव नवीन तरीके से शिक्षण कार्य करता है तो अंत्तः अधिगम की गुणवत्ता भी उच्च कोटि की होगी।

2 छात्रों एंव छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरुक्ता एंव जिज्ञासा उत्पन्न करना :

एक अध्यापक के लिए यह आवश्यक है कि वह छात्रों के पर्यावरण के प्रति जागरुक्ता एंव जिज्ञासा उत्पन्न करे। ज्ञान का आरम्भ ही जिज्ञासा एंव जागरुक्ता से होता है। मानव ज्ञान आज जिस कोटि पर है वह उसके ज्ञान के प्रति जिज्ञासा एंव विषय के प्रति जागरुक्ता के कारण से ही है। पर्यावरण शिक्षा प्रदान करने के लिए छात्र एंव छात्राओं में पर्यावरणीय ज्ञान के प्रति जिज्ञासा को उत्पन्न एंव विकसित करना होगा। पर्यावरण से मानव कैसे सम्बन्धित हैं, पर्यावरण का क्या प्रभाव मनुष्य पर पड़ता है, पर्यावरण को कैसे हानि हो रही है? आदि प्रश्नों के उतर छात्र जिज्ञासा एंव जागरूक्ता के आधार पर ही पता लगाया जा सकता है।

3 छात्र एंव छात्राओं को पर्यावरणीय चुनौतियों से अवगत कराना :

पर्यावरण की विभन्न चुनौतियों के विषय में छात्र एंव छात्राओं को अवगत कराने का कार्य शिक्षकों का होता है। यहाँ पर्यावरणीय चुनौतियों से तात्पर्य उन समस्याओं से है जो कि मानवीय आकांक्षाओं एंव आवश्यक्ताओं के कारण उत्पन्न हुई हैं। जैसे :

1ण मानव आवास में गिरावट
2ण मिटटी एंव भूमि संसाधनों का क्षरण
3ण वनिकी संसाधन क्षरण
4ण मत्स्य संसाधन ह्रास
5ण जल संसाधन में ह्रास
6ण जैविक विविधता
7ण जलवायु एंव वायु की गुणवता
8ण औधैगिक ऊर्जा खन्न और पर्यावरण

उपयुक्त कुछ पर्यावरणीय चुनौतियों के उदाहरण है जो कि बदलते परिवेश के साथ आज एक मुख्य चिंता का विषय बन गया है।

4 छात्र एंव छात्राओं से पर्यावरणीय समस्याओं एंव विषयों पर चर्चा करना :

पर्यावरणीय शिक्षा के अध्यापक के लिए यह आवश्यक है कि वह छात्रों के समक्ष विभिन्न पर्यावरणीय समस्याओं एंव उनसे सम्बन्धित अन्य विषयों पर चर्चा करें। एक शिक्षक के लिए यह वांच्छनीय है कि वह अपने छात्रों में एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करे यहाँ वैज्ञानिक दृष्टिकोण से तात्पर्य है कि छात्र कारण–प्रभाव सम्बन्ध के द्वारा किसी भी विषय पर आधारित अपने विचार प्रकट करें। यह न केवल छात्रों में एक नवीन दृष्टिकोण उत्पन्न करेगा वरन् छात्रों में किसी भी परिस्थिति के प्रति एक भिन्न दृष्टिकोण से विचार करने में भी सहायता करेगा।

5 शैक्षिक यात्राओं एंव भ्रमण की व्यवस्था करना:

एक अध्यापक के लिए यह अति आवश्यक है कि वो अपने छात्रों को न केवल पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करें वरन् समय समय पर छात्रों को व्यवहारिक ज्ञान से भी अवगत कराता रहे। पुस्तकीय ज्ञान छात्रों में केवल सैद्वान्तिक ज्ञान को ही विकसित करता है परन्तु उस सैद्वान्तिक ज्ञान को व्यवहारिक रूप में समझने के लिए विभिन्न शैक्षिक भ्रमण एंव यात्राओं की आवश्यक्ता पड़ती है। पर्यावरणीय शिक्षा प्रदान करते समय यही शैक्षिक भ्रमण एंव यात्रायें बहुत लाभ प्रदान करती है। क्योंकि यह छात्रों को व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्रदान करती है एंव प्राकृतिक सम्पदाओं एंव समस्याओं से प्रत्यक्ष भेंट इससे प्राप्त होती है।

6 व्यवहारिक कार्य के लिए आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराना:

अध्यापकों के लिए यह आवश्यक है कि व्यवहारिक ज्ञान के अवसरों के साथ ही साथ अध्यापक अपने छात्रों को व्यवहारिक ज्ञान से सम्बन्द्रित आवश्यक सामग्री भी उपलब्ध कराये। पर्यावरणीय शिक्षा का व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करने के लिए यह आवश्यक है कि अध्यापक अपने छात्रों को विषय से सम्बन्धित पुस्तके, हस्त पुस्तिकायें, निर्देश पुस्तकें, प्रायोगिक पुस्तकें इत्यादि उपलब्ध करायें।

7 पर्यावरणीय ज्ञान से सम्बन्धित विभिन्न भाषणों की व्यवस्था करना:

पर्यावरण शिक्षा के अध्यापकों के लिए यह आवश्यक है कि वह न केवल अपने ज्ञान से वरन् अन्य वक्ताओं के ज्ञान से भी छात्र एंव छात्राओं को समय समय पर लाभान्वित कराता रहे। विभिन्न वक्ताओं के द्वारा प्रदान किया गया ज्ञान न केवल ज्ञान के स्तर में वृद्वि करता है वरन् ज्ञान के क्षेत्र में भी विकास करता है। इस्से छात्र एंव छात्राओं के ज्ञान को एक नवीन दृष्टिकोण को जानने का अवसर मिलता है। अतः यह आवश्यक है कि अध्यापक समय समय पर विभिन्न वक्ताओं एंव भाषणें की व्यवस्था करें।

8 प्रदर्शर्न एंव प्रदर्श्नीयों की व्यवस्था करना :

पर्यावरण शिक्षा के अध्यापकों के लिए यह आवश्यक है कि वह समय समय पर विधालय में छात्रों एंव छात्राओं की व्यवस्था करते रहें। यह न केवल छात्रों के अन्दर रूचि उत्पन्न करेगा वरन् छात्रों में ज्ञान के प्रति जिज्ञासा भी उत्पन्न करेगा एंव विभिन्न दृष्टिकोणों को भी जानने के अवसर प्रदान करेगा।

9 सामाजिक सेवा एंव सामुदायिक सेवा कार्यक्रमों का आयोजन :

पर्यावरण शिक्षा के अध्यापक से यह वांच्छनीय है कि वह समय समय पर विभिन्न सामाजिक सेवा के कार्यक्रम आयोजित करायें, इससे छात्रों के अन्दर एक जिम्मेदारी की भावना, सहयोग की भावना का विकास होगा। अध्यापकों को समय समय पर सामुदायिक सेवा के कार्यक्रम भी आयोजित कराते रहना चाहिए इससे छात्रों एंव छात्राओं के अन्दर समुदाय के प्रति संवेदनशीलता एंव सहयोग की भावना का विकास होगा। शिक्षकों के लिए यह आवश्यक है कि वह विभिन्न शिविरों जैसैः राष्ट्रीय सेवा योजना, स्वंय संवक संघ आदि का समय समय पर आयोजन कराता रहे। यह छात्रों को उनके पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनायेगा।

10 पाठयक्रम विषय पढ़ाते समय पर्यावरण के मुददों को सहसम्बन्धित करना:

कक्षा में न केवल पाठय पुस्तक से सम्बन्धित वरन् अन्य विषय आधारित मुददों पर भी छात्रों के साथ विचार विमर्श करना चाहिए। छात्रों को यदि पर्यावरणीय मुददों को सहसम्बन्धित करके शिक्षण करेंगे तो छात्र एंव छात्रायें अपने परिवेश में होने वाले विभिन्न पर्यावरणीय मुददों को गम्भीरता से लेंगे। इससे न केवल वह अपने परिवेश को बेहतर समझ पायेंगे और इन मुददों पर अपने विचार भी प्रकट कर पायेंगे। पाठयक्रम को वास्तविक जीवन से सम्बन्धित करके पढ़ाने से छात्रों की विषय के प्रति रूचि बढ़ जाती है। पर्यावरणीय शिक्षा में जितना अधिक छात्रों को इन मुददों जैसैः प्रदूषण, मृदा क्षरण, बढ़ती जन्संख्या इत्यादि से अवगत कराया जायेगा, तो वो इसकी गम्भीरता को और अच्छी प्रकार से समझ पायेंगे।

11 नवीकरणीय एंव गैर नवीकरणीय संसाधनों पर जागरूक्ता उत्पन्न करना:

पर्यावरणीय शिक्षा के अध्यापकों के लिए यह आवश्यक है कि वह छात्रों को नवीकरणीय एंव गैर नवीकरणीय संसाधनों के बारे में ज्ञान प्रदान करते रहें। छात्रों को यह अवगत कराया जाये कि छात्र इन संसाधनों के बीच में विभेद कर सकें एंव इसके महत्व को समझ सकें। छात्रों को प्राकृतिक संसाधनों के बारे में ज्ञान प्रदान करना भी पर्यावरण शिक्षा के अध्यापक का दायित्व है। विश्व में किस संसाधन का प्रयोग किस स्तर पर हो रहा है किस संसाधन की उपलब्धता सरल है एंव किसकी जटिल यह छात्रों को बताना आवश्यक है।

12 छात्र एंव छात्राओं की पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में भागीदारी बढ़ाना :

छात्रों एंव छात्राओं के लिए यह आवश्यक है कि वह पर्यावरण सम्बन्धी गतिविधियों में सहयोग करें । इन कार्यक्रमों एंव गतिविधियों में सहयोग करने के द्वारा छात्रों में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता बढ़ेगी। वह पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को अच्छी प्रकार से समझ सकेंगे एंव पर्यावरण संरक्षण में अपनी भागीदारी दे सकेंगे। अध्यापक छात्रों को जागरूक करेगा एंव उन छात्रों को अन्य लोगों तक पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के लिए अभिप्रेरित करेगा। इससे छात्र एंव छात्राओं में सहयोग, भागीदारी एंव आत्मविश्वास की भावना में वृद्धि होगी।

13 विषाक्त उत्पादों और प्रकृति पर इसके प्रभाव के विषय में छात्रों को अवगत कराना :

पर्यावरण शिक्षा में यह आवश्यक है कि अध्यापक अपने छात्रों को विभिन्न विषाक्त उत्पादों के बारे में अवगत कराये। इन विषाक्त उत्पादों का क्या प्रभाव पर्यावरण पर पड़ता है यह छात्रों को बताना बहुत ही आवश्यक है। उदाहरणार्थ पॉलिथीन एंव कीटनाशक इनका दुष्प्रभाव पर्यावरण को किस स्तर तक हानि पहुँचा रहा है, यह किस प्रकार नियन्त्रित होगा एंव इसके नियंत्रण के लिए क्या कदम उठाने होंगे, इसका ज्ञान छात्रों को प्रदान करना अति आवश्यक है। पर्यावरण में कौन से पदार्थ हानि पहुँचाने में कारगर हैं यह छात्रों में पर्यावरण के प्रति एक संवेदनशीलता उत्पन्न करेगा एंव पदार्थों को समझ कर इस पर नियंत्रण करने का प्रयास कर सकेगा।

14 पर्यावरण संरक्षण के तरीकों के बारे में छात्रों को अवगत कराना:

पर्यावरण शिक्षा न केवल पर्यावरण के ज्ञान तक ही सीमित है वरन् यह इसके संरक्षण को भी सम्मिलित करती है। अध्यापक पर्यावरण के हर घटक का ज्ञान तो छात्रों को प्रदान करता ही है परन्तु पर्यावरण को किस प्रकार संरक्षित करना है यह भी छात्रों को बताना आवश्यक है। इससे छात्र न केवल जागरूक होंगे वरन् वो पर्यावरण के संरक्षण में भी अपना सहयोग दे सकेंगे। वह अपने घर से ही इसको आरम्भ करेंगे और अपने सम्पर्क में अन्य लोगों को भी जागरूक एंव लाभान्वित करेंगे।

15 विभिन्न प्रकार के प्रदूषण एंव प्रदूषकों के विषय में छात्रों को अवगत कराना:

पर्यावरण शिक्षा के अध्यापक का यह दायित्व है कि वह छात्रों एंव छात्राओं को विभिन्न प्रकार कि प्रदूषणों जैसे कि वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, मृदा प्रदूषण इत्यादि के बारे में अवगत कराना। जिससे कि वह इसके कारणों का पता लगा सकें एंव अन्य लोगों को इसके बारे में जागरूक कर सकें। साथ ही साथ छात्रों को विभिन्न प्रकार के प्रदूषकों के बारे में भी बताया जायें विभिन्न प्रदूषक जैसे भूमि स्तरीय ओजोन, लेड़, सल्फर ड़ाई ऑक्साइड़, नाईट्रोजन ड़ाई ऑक्साइड, काबर्न मोनो ऑक्साइड आदि विभिन्न प्रदूषक हैं जो कि पर्यावरण को निरन्तर हानि पहुँचा रहे हैं।

अतः हम यह कह सकते हैं कि एक अध्यापक का कार्य सरल नही, वरन् उसपर उन छात्रों एंव छात्राओं की जिम्मेदारी है जिन्हे कि पर्यावरण के प्रति जागरूक एंव जिम्मेदार नागरिक बनाना है ताकि वह पर्यावरण को केवल सिद्धांन्तो को ही नही बल्कि उसके संरक्षण को भी समझ सकें।

सन्र्दभ

1ण पर्यावरण शिक्षा : डॉ0 शालिनी सिंह
2ण पर्यावरण शिक्षा : डॉ0 दीप्ति जैन
3ण पर्यावरण अघय्यन : इराक बरूचा
4ण पर्यावरण अघय्यन : डॉ0 रतन जोशी
5ण पर्यावरण अघय्यन : अनिंन्दिता बसाक
6ण पर्यावरण शिक्षा एंव भारतीय सन्र्दभ : डॉ0 के पी पान्डे, डॉ0 अमिता भारद्वाज एंव डॉ0 आशा पान्डे
7ण पर्यावरण एंव पर्यावरण शिक्षा : डॉ0राजेश्वर उपाध्याय डॉ0 सुधा उपाध्याय